विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 17-02-2021

वर्ग- सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

व्यंजन सन्धि

जब व्यञ्जन के सामने कोई व्यंजन अथवा स्वर आता है तब 'हल्' (व्यंजन) सन्धि होती है।

व्यंजन संधि (हल् सन्धि) भी कहा जाता है

व्यंजन सन्धि के नियम

नियम (1) शचुत्व संधि (श्तोश्चुनाश्चु) यदि स् अथवा त वर्ग (त, थ, द, ध, न) के बाद या पहले श् अथवा च वर्ग (च, छ, ज, झ, अ) हो तो स् को श् तथा त वर्ग के अक्षरों का क्रमशः च वर्गीय अक्षर हो जाता है।

व्यंजन सन्धि के उदाहरण

सत् + चरित्रः = सच्चरित्रः

सत् + चित् = सच्चित्

रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति

उत् + चारणम् = उच्चारणम्

महान् + जयः = महाजय

यज् + नः = यज्ञ (ज ञ झ)

निस् + शब्द = निश्शब्द

नियम (2) ष्टुत्व सन्धि (ष्ट्र नाष्टुः)- यदि स् अथवा त वर्ग (त, थ, द, ध, न) के बाद या पहले ष् अथवा ट वर्ग (ट, ठ, ड, ण) के अक्षर आवे तो स् का ष् त वर्ग , ट वर्ग में बदल जाता है

व्यंजन सन्धि के उदाहरण

धनुष + टंकार - धनुष्टंकार

उद् + डयनम् = उड्डयनम्

तत् + टीका - तट्टीका

सत् + टीका - सट्टीका

षष् + थः = षष्ट

पेष् + ता= पेष्टा

नियम (3) जस्तव सन्धि- श्पादान्त (झलां जशझशि)–यदि किसी भी वर्ग के प्रथम, द्वितीय अथवा चतुर्थ अक्षर के पश्चात् किसी भी वर्ग का तृतीय अक्षर हो जाता है।

प्रथम भाग-यदि वर्गों के पथम अक्षर (क, च, ट, त, प) के बाद घाव य, र, ल, व्, ह्) को छोड़कर कोई भी स्वर या व्यंजन वर्ण आता है तो वह प्रथम अका त. प) अपने वर्ग का तीसरा अक्षर (ग. ज. ड, द, ब) हो जाता हो

दिक् + गजः = (क् का तीसरा अक्षर ग् होने पर)
दिग्गजः

वाक् + दानम् = (क् का तीसरा अक्षर ग् होने पर)
वाग्दानम्

वाक् + ईशः = (क् का तीसरा अक्षर 'ग्' होने पर)
वागीशः

अच् + अन्तः = (च का तीसरा अक्षर ज् होने पर)
अजन्तः

षट् + आननः = (ट् का तीसरा अक्षर ड् होने पर)
षडाननः

द्वितीय भाग-यदि पद के मध्य में किसी भी वर्ग के चौथे (घ, झ्, ढ, धू, भ) व्यंजन वर्ण के ठीक बाद किसी वर्ग का चौथा वर्ण आता है तो वह पूर्व वाला चौथा व्यंजन वर्ण अपने ही वर्ग का तीसरा व्यंजन वर्ण हो जाता है।

जैसे

लभ् + धः (भ् का तीसरा वर्ण 'ब' होने पर) लब्धः

दुध् + धम् (घ् का तीसरा वर्ण 'ग्' होने पर) दुग्धम्

नियम (4) चत्वं (खरिश्च -यदि किसी भी वर्ग के तृतीय अथवा चतुर्थ अक्षर के पश्चात् किसी भी वर्ग का प्रथम अथवा द्वितीय अक्षर अथवा श, ष, स में कोई अक्षर आये तो पहले वाले के स्थानपर अपने वर्ग का प्रथम हो जाता है,

व्यंजन सन्धि के उदाहरण

शरद + काल: = शरत्काल:

तद् + पिता = तत्पिता

सद् + कारः = सत्कारः

विपद् + काल: विपत्काल:

सम्पद् + समयः = सम्पत्समयः

नियम: अनुसार संधि (मोऽनुस्वारा सन्धि)-यदि पद के अन्त में 'म्' वर्ण तथा उसके बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो म् का अनुसार (•) हो जाता है,

व्यंजन संधि के उदाहरण

हरिम् + वन्दे - = हरिं वन्दे

गृहम् + गच्छति = गृहं गच्छति

दुःखम् + प्राप्नोति = दु:खं प्राप्नोति

त्वम् + पठसि = त्वं पठसि

अहम् + धावामि = अहं धावामि

सत्यम् + वद = सत्यं वद

सत्यम् + वद = सत्यंवद

. ‘